बीज महोत्सव 2025

चर्चा में क्यों?

राजस्थान, मध्य प्रदेश और गुजरात के आदिवासी त्रिसीमा में आयोजित चार दिवसीय **बीज उत्सव** (बीज महोत्सव) 2025 में स्वदेशी बीजों के **सांस्कृतिक और पारिस्थितिकी महत्व** का उत्सवपूर्वक प्रदर्शन किया गया।

- देशी बीज एक **निश्चित जलवायु और स्थान** पर पैदा होते हैं और उनका **संरक्षण** प्रायः **स्थानीय समुदायों के द्वारा किया जाता है।**

मुख्य बिंदु

- **बीज महोत्सव के बारे में**
- **कार्यक्रम एवं सम्मान:**
  - इस महोत्सव में अ**नाज, दालों, सब्ज़ियों और फलों** के स्वदेशी बीजों को प्रदर्शित किया गया, जिनमें कई दुर्लभ और विस्मृत किस्में भी शामिल थीं।
  - पारंपरिक फलों के बीजों में **जंगली आम, आकोल और टिमरू शामिल थे,** जबकि पारंपरिक अनाज में **दूध मोगर (देशी मक्का) और काली कामोद और ढमिरी की** धान की किस्में शामिल थीं।
  - बीज संरक्षण में योगदान के लिये समुदाय के सदस्यों को **'बीज मित्र'** तथा **'बीज माता'** जैसे सम्मान प्रदान किये गए।
- **भागीदारी:**
  - आदिवासी **महिलाओं तथा बच्चों** ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की और **कई फसल चक्रों हेतु बीज संरक्षण की तकनीकें** सीखी।
- **संस्थागत सहयोग:**
  - **कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन, ग्राम स्वराज समूह, सक्षम समूह तथा बाल स्वराज समूह** जैसे **समुदाय-आधारित संस्थानों** ने उत्सव के आयोजन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।
  - इन्हें **बांसवाड़ा-स्थित स्वैच्छिक संस्था 'वाग्धारा'** का सहयोग प्राप्त हुआ, जो **आदिवासी आजीविका** से जुड़े मुद्दों पर काम करता है।

नोट:

- वाग्धारा एक गैर-लाभकारी संगठन है, जो **राजस्थान सोसायटी पंजीकरण अधिनियम, 1958 के तहत संचालित होता है।**
- इसका नाम 'वाग्धारा', इसके कार्यक्षेत्र **'वागड़'** (गुजरात से सटे राजस्थान का आदिवासी क्षेत्र) और **'धारा'** (अर्थात् धारा या प्रवाह) से मिलकर बना है।

सतत् कृषि में स्वदेशी बीजों का महत्त्व

- **बीज संप्रभुता:** देशी बीज किसानों को **बीजों पर स्वामित्व** बनाए रखने की शक्ति प्रदान करते हैं, जिससे वे **महंगे एवं रासायन-आधारित** संकर बीजों पर निर्भर नहीं रहते।
- जलवायु अनुकूलता: देशी बीज प्रायः **स्थानीय कृषि-परिस्थितिकी परिस्थितियों** के अनुकूल होते हैं, जिससे **जलवायु परिवर्तन** के दौर में भी **फसल स्थिरता** बनी रहती है।
- **सांस्कृतिक पहचान:** काली कमोद चावल, दूध मोगर मक्का तथा करींदा तरबूज जैसे बीज आदिवासी खानपान प्रणाली में **सांस्कृतिक तथा पोषणात्मक महत्त्व** रखते हैं।
- **कम आगत वाली कृषि:** ये बीज कम रासायनिक उपयोग में भी फलदायी होते हैं, जिससे पर्यावरण-संवेदनशील तथा कम लागत वाली कृषि को बढ़ावा मिलता है।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/seed-festival-2025